Impact Factor – 6.261 | Special Issue - 145 | Feb. 2019 | ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

RECENT TRENDS IN

ENGLISH, MARATHI, HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

- GUEST EDITOR -
Principal Dr. P. P. Sharma

- CHIEF EDITOR -
Dr. Dhanraj T. Dhangar

- EXECUTIVE EDITORS -
Dr. S. S. Choutmalwale
Dr. A. T. More | Dr. P. S. Patil

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

हिंदी

८४. आधुनिक हिन्दी कविता में किसान की वेदना २३२
डॉ. अमित कुमार सिंह कुशवाहा
८५. मैत्रयी पुष्पा के उपन्यास में स्त्री–विमर्श अगनपाखी उपन्यास के संदर्भ में २३९
प्रा.डॉ.सांगोळे शिवाजी
८६. मैत्रयी पुष्पा के उपन्यास में स्त्री विमर्श 'विजन' उपन्यास के संदर्भ में २४१
डॉ. अश्विनीकुमार चिचोंलीकर
८७. हिंदी विभाजन के उपन्यासों का अंग्रेजी में अनुवाद २४३
प्रा. पी. बी. सावंत
८८. जीरो रोड़ की वैश्विकता और वैश्विकरण २४५
डॉ. शेख अफरोज फातेमा
८९. आधे–अधुरे जीवन की कहानी – अस्तित्व और पहचान २४७
प्रा. डॉ. कुसुम राणा
९०. हिंदी साहित्यकार प्रेमचंद का हिंदी सिनेमा में योगदान २४९
डॉ. दिग्विजय टेंगसे
९१. आधुनिक हिन्दी साहित्य में विविध विमर्श आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी की बदलती भूमिका २५१
डॉ.राजश्री भामरे
९२. आधुनिक हिंदी साहित्य में दलित विमर्श (प्रेमचंद के संदर्भ में) २५३
प्रा. पठाण जयनुल्लाखान
९३. आधुनिक हिंदी साहित्य में विविध विमर्श २५६
डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह
९४. २१ वी सदी के हिंदी साहित्य में मानवतावाद २५९
डॉ. विनोद श्रीराम जाधव
९५. समकालीन हिंदी काव्य में मानवतावाद २६२
डॉ. संतोष विजय येरावार
९६. "किन्नरों के संघर्षपूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति" (चित्रा मुद्गल कृत 'नाला सोपारा' के संदर्भ में) २६५
प्रा. डॉ. बेवले ए. जे.
९७. दौड : आधुनिक जीवन में उत्पन्न (अंतहीन दौड का संवेदनात्मक चित्रण) २६८
डॉ.गजाला वसीम अब्दुल बशीर शेख
९८. आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विमर्श २७०
सुरेखा एस. लक्कस
९९. आधुनिक हिन्दी साहित्य में मनोविज्ञान और कल्पना २७३
प्रा.निर्मला लक्ष्मण जाधव
१००. हिंदी आत्मकथा में स्त्री २७५
डॉ. रिना आर. सुरडकर
१०१. जनसंचार माध्यमों में हिंदी विज्ञापनों का महत्त्व २७७
डॉ. अमानुल्ला शेख
१०२. हिंदी कहानियों में नारी विमर्श २७९
डॉ. शेख एन. डी.
१०३. विश्व के विविध देशों में हिंदी की दिशा एंव दशा २८१
डॉ. दत्तात्रय नानासाहेब फुके
१०४. भूमंडलीकरण और हिंदीउपन्यास २८४
प्रा. सुभद्रा कुमारी सिन्हा

ISSN : 2348-7143
February 2019
RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | *Special Issue 145 :* Recent Trends in English, Marathi and Hindi Language and Literature

समकालीन हिंदी काव्य में मानवतावाद

डॉ. संतोष विजय येरावार
देगलूर महाविद्यालय देगलूर

मानवतावाद में मनुष्य का कल्याण एवं हित केंद्र में होता हैं । मानवीय जीवन के सुखकर, समाजउपयोगी, नैतिकदृष्टि से दृढ एवं सर्व समावेशक बनानें हेतू मानवतावाद आवश्यक है । जाति, वर्ण, धर्म, वर्ग, लींग, मानवतावाद में स्थान नहीं हैं । वह तो विश्वव्यापी, सर्वसमाज के हितो का पक्षधर हैं । मानवतावाद में मानव धर्म, मानवीय मुल्य, मानव गरिमा को महत्व हैं । समता, न्याय, स्वातंत्र्य, बंधूता, अहिंसा संवदेना, समर्पन, दया, वात्सल्य, एवं प्रेम यह मानवता के वाहक हैं । समाज के बदलते स्वरुप के साथ-साथ मानवता भी पतित होती जा रहि हैं । आदर्श समाज के लिए मानवतावादी दृष्टिकोन अतंत्य आवश्यक है, परंतु वैश्वीकरण, बाजारीकरण, निजीकरण, यांत्रिकीकरण, और पुंजीवादी अर्थव्यवस्था के कारण अनेको मानवीय मुल्य धराशाही होते जा रहे हैं । नैतिकता, चरित्र, आचरण, सत्य, आदि मनुष्य को बोझ लगने लगे हैं । बाहयआडंबर, भौतिक सुखसाधन, चकाचौंध, मनोरंजन, क्षणिक सुख, उन्मुक्तता, स्वैराचार, को मनुष्य अपना रहा हैं । समाज के पतन को सवं मानव के दमन को मानवतावाद से ही पराजित किया जा सकता है । मानवता की स्थापना, मानवीय मुल्यों की महता एवं सामाजिक हितो को साहित्य के व्दारा पुन: स्थापित किया जा सकता हैं । मनुष्य को मानवीय गुणों से युक्त बनाने का सामर्थ्य साहित्य में हैं । स्वातंत्रोत्तर हिन्दी काव्य में मानवीय मुल्यों की स्थापना का सामर्थ्य दृष्टीगोचर होता हैं । स्वातंत्रता के पश्चात सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक राजनौतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति तेजीसे बदलने लगी । आत्मकेंद्रीवृत्ती,स्वार्थ, लालच, सत्ता, एवं भौतिकवादी वृत्ती के कारण विकृती, विडंबना एवं विषमताओं का चलन व्यापक होने लगा । मानव, मानवता, समाज, पर्यावरण, पशु-पक्षी, नैसर्गिक धरोहर का महत्व कम होने लगा और भौतिक सुख-साधनों का, वासना का, अनैतिकता का, अनाचार का, संपत्ती और अधिकारों का महत्व बढने लगा । मानव के अतिलालसा ने उसे विक्षिप्त, विकृत, घृणित एवं हिंसक बना दिया ।

आतंकवाद, नकसलवाद, सांप्रदायिकता बेरोजगारी, अनिती, शोषण, असमानता, वर्गवाद, यांत्रिकता, वासना, लुट-खसोट, भ्रष्टाचार आदि अपने पैर पसारने लगे । यैसे बिकट परस्थिती में मानव का पथसंचलन करने का कार्य हिन्दी कविता ने किया । सामाजिक, एवं मानवीय मुल्यों की उपयोगीता को अभिव्यक्त कर मानवकल्याण का कार्य स्वातंत्रोत्तर कविता ने किया हैं । नागार्जुन, धुमील, अज्ञेय, मुक्तिबोध, मैथिलीशरणगुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, केदारनाथ सिंहि, रघुवीर भारती, केदारनाथ अग्रवाल, चंद्रकांत देवताले, राजेश जोशी, अशोक वाजपेयी आदि अनेंको कवियों ने मानवतावाद को महत्व दिया । समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, विषमता, शोषण, एव विकृती के विरोध में अपनी आवाज बुलंद की और लोगो को समस्यावों के प्रती सचेत कर समानता, शांती, अहिंसा एवं मानवतावाद की स्थ-ापना का प्रयास किया ।

स्वातंत्रोत्तर कविता मानवता की स्थापना हेतू निरंतर प्रयत्नशील रहीं है । शोषित, वंचित एवं उपेक्षित वर्ग के अन्याय एवं अत्याचार को वानी प्रदान करने का कार्य कविता नें किया हैं । किसान, दलीत, स्त्री एवं आदिवासी, वर्ग की पीडा कविता में अभिव्यक्त हुई है । मानवता की स्थापना तभी हो सकती हैं जब समाज के विविध घटको के साथ मानवीय व्यवहार किया जाए । समता और स्वातंत्र की स्थापना हों । मानवीय मुल्य सभी वर्ग में स्थापित हों । परंतु दलित, स्त्री एवं आदिवासी अनादी समय से वंचित, शोषित एवं दुर्लक्षित रहें है । नारी मुक्ती का स्वर स्वातंत्रोत्तर कविता में दृष्टिगोचर होता हैं । घ्उगते अंकुर की तरह जियो डकविता में सुशीला टाकभोरे स्त्री अस्तीत्व को झंकझोर थी हैं ।

चस्वयं का पहचानों
चक्की में सिते अन्न की तरह नही
उगते अंकुर की तरह जियो
धरती और आकाश सबका हैं ।
हवा प्रकाश किशके वश का है
फिर इन सब पर भी
क्यों नहीं अपना हक्क जताओ
सुविधाओं से समझोंता करके
कभी न सर झुकाओ
आप ही हक माँगो
नयी पहचान बनाओ
धरतीपर पग रखने से पहले ।
अपनी धरती बनाओ ।छ

नारी के साथ समाज व्यवस्था नें पशुजैसा व्यवहार किया हैं । उसे उपभोग की वस्तुमात्र समझा हैं । उसका मानवीय धरातलपर कभी स्वीकार नहीं किया गया । मानवकल्याण यह मानवतावाद का केंद्र हैं परंतु स्त्री, दलीत, आदिवासीयोंका कल्याण जबतक नहीं होगा तबतक मानवतावाद कोरा हैं ।

मानवता की स्थापना में सबसे अधिक बाधा निर्माण करनेवाला तत्व हैं सांप्रदायिकता । धर्म, वर्ग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय, धर्म एवं जाति के नामपर समाज में हिंसा फैलाने वाले विकृत मानसिकता के लोग तणाव एवं हिंसा का माहौल निर्माण करते हैं । राजनीतिक स्वार्थ के भेट आमलोग चढ जाते हैं । सत्तापाने की लालसा हिंसा को बढावा

देती हैं । धर्म, प्रथा, एवं परंपरा के नामपर धर्म के ठेकेदार दबावतंत्र एवं हिंसातंत्र का सहारा लेते हैं । धर्म के नामपर आतंकवाद को बढावा दिया जा रहा हैं । मासुम युवको को बरगलाया जा रहा हैं ।

मानव बॉम्ब तक धर्म के नामपर बन रहें है । कट्टरतावाद धर्म के नामपर फैलाया जा रहा हैं । युवकों को राष्ट्रविरोधी कार्य में समाहित करने के लिए धर्म का सहारा लिया जा रहा हैं । कश्मीर के पुलवामा में बर्बरतापुर्ण आंतकवादी हल्ला मानवी बॉम्ब के सहारे किया गया । आंतकवादीयों को जन्नत, बहात्तरहुरे प्राप्त होने के नामपूर हिहादी एवं आंतकवादी बनया जा रहा है । धर्मांध युवक धार्मिक षडयंत्र की भेट चढ रहे हैं । दुसरे धर्म एवंम पंत के लोगो कों मारना गुनाह नहीं ओ तो अल्लाह और इस्लाम कि सेवा हैं । इसतरह युवकों को बरगलाया जाता है ।

झुठे धर्म को परोसकर युवकों को आंतकवादी बनाया जाता है । जिसकारण धर्म, समाज, राष्ट्र एवं मानव की हानी होती हैं । वास्तव में कोई धर्म आंतक नहीं सिखाता परंतु कुछ कट्टरवादीतत्व धर्म के नामपर आंतक कैलाकर मानवता कों हानी पहुँचा रहे है । प्राप्त के सधर्म के ठेकेदार मानवता की स्थापना के ठेकेदार मानवता की स्थापना के लिए वास्तविक समाजउपयोगी धर्मतत्व का प्रचार प्रसार करने के बजाय विकृत, पाखंडी, घृणित तत्वों का प्रचार- प्रसार अपने स्वार्थ के लिए कर रहें हैं । कवि ध्कुमार विकलङ तथाकथित धर्म के ठेकेदारों से प्रश्न करते हैं ?

च्क्या तुम मुझे यह सब बता सकते हो
इन रक्त सने कपडों, फटे जूतों, टूटी साइकिलों
किताबों और खिलौनों की कौम क्या है
क्या तुम मुझे बता सकते हो
स्कूल से कभी न लौटने वाली
बच्ची की प्रतीक्षा में खडी
माँ के ऑसुओं का धर्म क्या है
और अस्पताल में दाखिल
जख्मियों की चीखो का मर्म क्या है ।छ

मानवता हि सबसे बडा धर्म है । मनुष्य के उचित, सहज एवं आनंददायी जीवन के लिए भूमित करनेवाले धर्म की कोई आवश्यकता नहीं हैं । समाज में सुख, शांती एवं समृदधी के लिए एकमात्र मानवधर्म हि सहायक हैं ।

संत कबीर, संत नामदेव, तुलसीदास, रैदास, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, नागार्जुन, धुमिल, अज्ञेय, मैथलीशरणगुप्त, रांगेयराघ आदि सभी कवियों ने मानवधर्म की स्थापना हेतू कविता को अपनाया हैं । सत्य, अहिंसा, समता, न्याय, स्वातंत्र एवं शांती स्थापित करने का प्रयास किया हैं । मानवधर्म की स्थापना हेतू सदभाव शांती की कामना करनेवालीच नीलेश रघुवंशीङ की यह कविता

आकाश समेत सारी धरती को ले लिया चपेट में आततताइयों ने
झुंड के झुंड
हवा में लाठियाँ, त्रिशुल भाँजते, जयघोष से उनके काँपती धरती
शांती की अपील और जलती मोमबत्ती लिए
सदभाव शांति यात्रा निकल रही है ।
मुश्किल से सौ पचास लोग भी नहीं इस यात्रा में ।
अपने दो बरस के बेटे का हाथ पकड होती हूँ शामिल ।
शांति यात्रा में
पकडाती हूँ नन्हें हाथ में तख्ती शांति अपील की
करती हूँ प्रार्थना
कभी न शामिल हो मेरा बेटा उन्मादी भीड में ।छ

सर्वसमावेशक सोच मानव में स्थापित हो जाएगी तो आतंक, संघर्ष, दंगे-फसाद कभी नहीं होगे । अहिंसा, शांती एवं प्रेम से ही मानवता की स्थापना संभव है जिसे स्थापित करने का यत्न कविता के माध्यम से किया गया हैं । सांप्रदायिकता, धर्मांधता, जातियता के कारण मानवता की तलाश संभव नही हैं । राजनीति, मीडिया, तथाकथित बुदधीजिवी अपने स्वार्थ की रोटी सेखने के लिए सामान्य अवाम को संघर्ष और हिंसा के लिए प्रेरित करती हैं । लोगों की भावनाओंको भडकाकर अपना हित साधने की वृत्ती सर्वत्र परिलक्षित हो रहीं है । राष्ट्र, समाज एवं मानव को समृदधी, विकास और संपन्नता प्राप्त करने के लिए मानवता एवं शांति का हात थामना होगा । मानवता की भलाई के लिए शांती की कामना करती घ्शैल सक्सेनाङ की कविता

च्भावि संततियों पाठ लो इतिहास से
भाव परिवर्तन करो, शांतिपूर्ण विकल्प खोजो
पारस्पारिक विरोधों के समाधान का
कल्याण होगा तभी मानवता का
शांति मिलेगी तभी
शांति दो प्रभु अब चिर शांति दो
शांति । शांति । शांति । छ

परस्पर भिन्न वर्ग के विरोध का शमन शांति के द्वारा ही संभव हैं । भारत जैसे विविधता में बँटे राष्ट्र के लिए मानवता की स्थापना प्रेम एवं शांति से ही संभव है । जाति-पाति, भाषा, धर्म , वर्ग, प्रांत, संप्रदाय, रीति-रिवाज, खान-पान में विविधता भारत की विशेषता भी हैं और कमजोरी भी हैं । स्वार्थ केंद्रित राजनीति इसी विविधता को अपने हितों के लिए अपनाती हैं । सांप्रदायिकता , और सत्ताकेंद्रित विकृत मानसिकता से उपजे संघर्ष से मात्र हानी और पीडा जन्म लेती है ।

हिंसा, विरोध, संघर्ष, दंगे, एवं युध्द किसी समस्या का समाधान नहीं हैं । हिंसा के प्रतिक्रिया स्वरुप हिंसा मात्र समस्या कों विक्षिप्त एवं विस्तृत बनाती है । मानवता की स्थापना केवल शांती एवं अहिंसा मात्र से हि संभव है । युध्द विभिषिका का चित्रण उसकी भयावहता को दर्शाता हैं । युध्द एवं दंगो से उपजी भयावहता से लोगों को सचेत करती घ्शैल सक्सेनाङ की कविता

ISSN : 2348-7143 February 2019 RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | Special Issue 145 : Recent Trends in English, Marathi and Hindi Language and Literature

ADARSH EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR * Dist.Nanded *

च्युध्द के महानाश, भीषणता, निरर्थकता की ।
सर्वाधिक, अतिग्रस्ता, पीडिता मैं गांधारी ।
संदेश देती हूँ भावी मानवता को ।
युध्द समाधान नहीं है किसी भी समस्या का।
युध्द तो असंख्य समस्याओं का जन्मदाता है।
शोषण, अधम्र, अन्याय, अशांति का प्रतिकार।
मन वचन, कर्म, अहिंसा में ।
शांति मात्र शांति इष्ट है वसुधा पर ।छ

भारत की परंपरा अहिंसा, दया, प्रेम एवं निर्माण की रही हैं । मानवता हमारे परंपरा का अटूट हिस्सा है । मानवता दया, त्याग हमारी परंपरा के अंगविशेष हैं । महात्मागांधी, गौतमबुध्द स्वामी विवेकानंद जनमानस के मनमस्तिक में बसे हैं । मानवता ही हमारी मूल संवेदना है । शांति मे विश्वास रखनेवाली घ्महेन्द्र भटनागरड की यह कविता.

च्कुछ लोग चाहे जोर से कितना
बजाँए युध्द का डंका
पर, हमी कभी भी शांति का झंडा
जरा झुकने नहीं देगे
हम कभी भी शाति की आवाज को
दबने नहीं देंगे
क्योंकि हम इतिहास के आरंभ से
इंसानियत में शांति में विश्वास रखते हैं ।छ

वैश्वीकरण, शस्त्रस्पर्धा, पाश्चात विकृत संस्कृति का प्रभाव, सत्तालोलुप मानसिकता, स्वकेंद्रित विचारधारा, उपभोग प्रधान आ-चरण एवं बाजारवाद नें मनुष्य की सोच को विकृत, हिंसक एवं विषाक्त बना दिया हैं । मानव यह मानवता को त्यागकर पशुता एवं यांत्रिकता की और आकृषित हो रहा हैं । असंवेदनशीलता ने मनुष्य को पतित बना दिया हैं । सर्वत्र शस्त्र-अस्त्रो की स्पर्धा के कारण अशांति एवं अमानवियता पनप रही है । महानगरीय चकाचौंध ओर अंधीदौड ने मनुष्य को स्वार्थी मोही एवं अर्थकेंद्रित बना दिया है, जिस कारण मानवता दम तोड रही हैं और पशुता अपने पैर मजबुत कर रही है । ऐसे माहौल में मानवता की स्थापना करने का प्रयास हिन्दी कविता के माध्यमसे किय गया है । मानव को मानवता के पाठ पढाने का कार्य हिन्दी काव्य नें किया हैं ।

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded